करने का फैसला किया है।

वस्तुतः इन सभी जैविक हथियारों से आज मानव जाति के खात्मे का खतरा पैदा हो गया है। इन हथियारों से खाद्य स्त्रोत भी प्रभावित हो सकते हैं जिससे सम्पूर्ण पृथ्वी पर जीवन का विनाश हो जाएगा। जैव हथियारों का प्रयोग करते समय प्रतिकूल हवा हो जाने पर वह जैव हथियार प्रयोग करने वाली सेना को भी नष्ट कर सकता है। आज सम्पूर्ण विश्व को इस समस्या के निवारण में लगना होगा वरना वह दिन दूर नहीं जब पृथ्वी का सम्पूर्ण विनाश हो जाएगा। ***(स्त्रोत फीचर्स)***

शांति के लिए गोलियां

शायद एक ऐसी गोली बनाना संभव हो जो लोगों का आक्रामक व्यवहार कम कर दे। आक्रामकता एक दिमागी स्थिति है। जैव रसायन की दृष्टि से देखें तो दिमाग में कई रसायन होते हैं जो आक्रामक व्यवहार के लिए ज़िम्मेदार कहे जा सकते हैं। यू.एस. के नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ के वैज्ञानिक स्कॉट यंग ने कुछ चूहों के दिमाग में इस तरह के परिवर्तन करने में सफलता प्राप्त की है कि वे अन्य चूहों से कम झगड़ते हैं। इन चूहों के दिमाग में एक विशेष रसायन को ग्रहण करने वाला रिसेप्टर नदारद कर दिया गया था। ऐसा करने के बाद, जब अन्य चूहे इनके क्षेत्र में घुसपैठ करते हैं तब भी ये लड़ाई नहीं करते। स्कॉट यंग का कहना है कि यदि इंसानों में भी इस रिसेप्टर की क्रिया को दबाया जा सके तो आक्रामकता को काबू किया जा सकता है। एक फ्रेन्च कंपनी (सैनोफी सिन्थलेबो) ने इस रिसेप्टर को दबाने वाली एक दवा तैयार भी कर ली है मगर अभी इंसानों पर इसका परीक्षण नहीं हुआ है।

दरअसल स्कॉट यंग और उनके साथी देखना चाहते थे कि यदि चूहों में वेसोप्रेसिन नामक हॉर्मोन का रिसेप्टर न हो, तो क्या होगा। वेसोप्रेसिन वह हॉर्मोन है जो गुर्दों में पानी के अवशोषण पर नियंत्रण करता है। इसके अलावा यही हॉर्मोन एक अन्य दिमागी रिसेप्टर के ज़रिए व्यवहार पर भी असर डालता है। तो, स्कॉट यंग ने ऐसे चूहे निर्मित किए जिनमें यह रिसेप्टर (वेसोप्रेसिन 1 बी रिसेप्टर) नहीं था। इन चूहों को अलग-अलग परिस्थितियों में रखने पर देखा गया कि ये आम तौर पर लड़ाई-झगड़े से बचते हैं। इन चूहों का बाकी व्यवहार सामान्य रहा। जैसे यौन क्रिया में ये सामान्य रहे, भूख लगने पर भोजन की तलाश में सामान्य रहे। उनकी हरकतें व संवेदनशीलता भी सामान्य रही। सिर्फ एक साइड प्रभाव देखा गया कि इन्हें अन्य चूहों को पहचानने में थोड़ी परेशानी होती है।

स्कॉट यंग का कहना है कि इस गोली का उपयोग दिमागी चोट के बाद या अल्ज़ाइमर रोग के कारण उत्पन्न आक्रामकता पर काबू पाने में किया जा सकता है। मगर अभी एक सवाल तो यह है कि क्या यह तरीका इंसानों में कारगर होगा। स्कॉट यंग के सामने यह सवाल भी है कि व्यवहार परिवर्तन करने वाली अन्य दवाइयों की तरह इसका भी कितना उपयोग-दुरूपयोग होगा। जैसे हो सकता है कि जेल अधिकारी इसका उपयोग आक्रामक कैदियों पर करने लगें। कहने का मतलब यह कि ऐसी दवाई के लिए उपयुक्त मरीज़ कौन है, इसका फैसला हमेशा की तरह एक मुश्किल काम होगा, शायद विवादास्पद भी। ***(स्त्रोत विशेष फीचर्स)***